कुलुस्सियों

लेखकः

प्रभु यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस

समयः

लगभग 60 वीं ईस्वी में

विषयः

यीशु मसीह की खुशी के समाचार को दूसरों तक ले जाने के कारण पौलुस को सताया गया और जेल में डाल दिया गया। लेकिन वह अपनी पीड़ा के लिए दुखी नहीं हो रहा था। उसका सारा मन मसीह और उनके लोगों पर था। वह खुद कभी भी कुलुस्से नहीं गया था लेकिन वहाँ के हालात से परिचित था। इसलिए उनके साहस को बढ़ाने के लिए, मसीह क्या हैं और उन्हों ने विश्वासियों के लिए क्या किया था यह बताने के लिए यह पत्र लिखा। खास बात जिस पर वह ज़ोर डालता है वह है मसीह की सर्वश्रेष्ठता और उन में विश्वासियों की परिपूर्णता व भरपूरी। कुछ झूठे शिक्षक कुलुस्से पहुँच गए। अपने आप को बुद्धिमान जताकर कुछ बेवकूफ़ी की शिक्षा देने लगे। इस तरह यीशु मसीह की शिक्षा के विपरीत सिखाकर उन्हों ने सुसमाचार में गड़बड़ी डलनी चाही। उनका कहना था कि जिस ज्ञान की बात वे कह रहे हैं, वह मुक्ति के लिए ज़रूरी है। वे कह रहे थे कि यीशु परमेश्वर नहीं हैं या दुनिया को सज़ा से बचाने वाले मुक्तिदाता नहीं हैं। उनका कहना यह था कि परमेश्वर और इन्सान के बीच तमाम स्वर्गदूत और आत्माएँ मध्यस्थ हैं, जिन में से यीशु एक हैं। ये लोग सिखा रहे थे कि स्वर्गदूतों की पूजा और अपनी देह को पीड़ा पहुँचाना अच्छी बात है। इन सभी गलत शिक्षाओं का पौलुस ने विरोध किया। उसने बताया कि दुनिया के लोगों के उद्धार के लिए यीशु ने कीमत चुकायी और उन्हें खरीद लिया (1:13-14,20)। यीशु के परमेश्वरत्व की बात कही (1:15-19) और सिद्ध बुद्धि और ज्ञान के बारे में बताया, जिसे विश्वासी मसीह यीशु में पाते हैं (2:3)। कुछ मुख्य पद हैं 2:8-10.

1 पौलुस, जो परमेश्वर की इच्छा से
यीशु मसीह का प्रेरित है, और भाई
तिमुथियुस की ओर से 2कुलुस्से में रहने
वाले मसीह में पवित्र और विश्वसनीय
लोगों को हमारे स्वर्गिक पिता परमेश्वर
से असीम कृपा तथा शान्ति मिले।

3हम प्रभु यीशु मसीह और उनके पिता को
धन्यवाद देते हैं और तुम्हारे लिए बिनती
करने में लगे हुए हैं। 4हम ने तुम्हारे उस प्रेम
के विषय जो सब पवित्र लोगों के लिए है
और उस विश्वास के बारे में जो मसीह यीशु
में है, सुना है। 5यह उस आशा के कारण
है जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुयी है।
तुम ने इस आशा के विषय में सुसमाचार
के सत्य वचन द्वारा पहले ही से सुना था।
6जो वचन पहले तुम्हें दिया गया है, जिसे
अन्य लोगों को भी दिया गया, दुनिया में
असर दिख रहा है। जब से तुम ने इस
सुसमाचार को सुना और सच में परमेश्वर
की असीम दया को जाना है, यह तुम में
भी बढ़ता जा रहा है। 7इस आशा के बारे
में तुम ने इपफ्रास से सुना था, जो हमारा
सहकर्मी और विश्वास रखने लायक सेवक
है। 8उसने पवित्र आत्मा में तुम्हारे प्रेम के
विषय हमें बताया है।

9इसी कारणवश, हम ने भी जिस दिन
से यह सुना है, तुम्हारे लिए लालसा करने
और प्रार्थना में नहीं चूकते, ताकि तुम
यीशु की इच्छा की पहिचान जो पूर्ण ज्ञान
और आत्मिक समझ के साथ है, भरपूर

1:1 "यीशु...प्रेरित"- रोमि. 1:1; गल. 1:1.

"तिमोथी"- फ़िलि. 1:1.

1:2 कुलुस्से इफ़िसुस से पूर्व लगभग 160 कि.मी. दूर एक छोटा सा शहर था। यह तुर्किस्तान का एक भाग था। यह लौदीकिया के पास था।

1:3-4 रोमि. 1:8; इफ़ि. 1:15-16 से तुलना करें.

1:5 "आशा"- यह उस आशा के विषय में है, जिसे विश्वासी एक दिन प्राप्त करेगा। यह वह आशा नहीं है जो उनके भीतर अभी है। पद 27; तीतुस 1:2; 2:13 से तुलना करें।

"रखी हुयी है"- 1 पतर. 1:4.

"सुसमाचार"- रोमि. 1:16; 1 कुरि. 15:1-8.

1:6 "असर"- मत्ती 13:8; मरकुस 4:26-29. अच्छा संदेश मुक्ति के लिए परमेश्वर की ताकत है (रोमि. 1:16) जब साफ़-साफ़ तरीके से, साहस से और ईमानदारी से इसे बताया जाता है, इसका परिणाम दिखता है।

"असीम दया"- यूहन्ना 1:14,16; रोमि. 1:7; इफ़ि. 2:8-9 के नोट्स देखिए।

"जाना है"- ज्ञान और परिणाम (फलदायकता) के बीच के सम्बन्ध को देखें। मत्ती 13:23 से तुलना करें बीच के सम्बन्ध को देखें। मत्ती 13:23 से तुलना करें।

1:7 "इपफ्रास"- 4:12; फिले. 23. ये पद मसीह के इस सेवक के बारे में सब कुछ बताते हैं।

"सेवक"- रोमि. 1:1; 6:18,22. "विश्वास योग्य सेवक"- से बढ़कर और क्या कुछ कहा जा सकता है? उस पर विश्वास रखा जा सकता है।

1:8 "पवित्र आत्मा में तुम्हारे प्रेम"- रोमि. 5:5. हमारे पास मात्र स्वर्गिक पिता का प्यार (यूनानी भाषा में "अगापे" - 1 कुरि. 13:1 पर नोट्स देखे) उन्हीं के द्वारा हो सकता है। इसे सारी पृथ्वी पर सच्चे विश्वासियों में देखा जा सकता है।

1:9 "प्रार्थना में नहीं चूकते"- विश्वासियों के लिए प्रार्थना का यहाँ एक और नमूना है - इफ़ि. 1:17-19; 3:16-19; फ़िलि. 1:9. इन में से किसी भी बात में वह भौतिक बातों के लिये बिनती नहीं करता है। उसकी इच्छा थी कि वे बुद्धि, समझ, शक्ति और प्रेम प्राप्त करें। आईये, हम इसी को अपना नमूना बनाएँ।

"यीशु...पहचान"- रोमि. 12:2 वह ऐसी प्रार्थना इसलिए करता है क्योंकि वह जिन गुणों को उन में देखना चाहता है पद 10 वे सभी इस पर निर्भर हैं। हम सृष्टिकर्ता की इच्छा को तभी पूरा कर सकते हैं, जब हम उस इच्छा को जानते हैं।

"पूर्ण...समझ"- यह इस पत्र का एक विषय भी है - पद 28; 2:2,3; 3:16. केवल परमेश्वर यह दे सकते हैं - इफ़ि. 1:17. शिक्षा या दर्शन शास्त्र इसे उत्पन्न नहीं कर सकता। बाईबल या परमेश्वर के बारे में जानने से बढ़कर है। यह दोनों स्वर्ग से ही प्राप्त होते हैं और इन्हें प्राप्त करने के लिए हमें स्वर्गिक पिता में लगन होनी चाहिए। तुलना करें अय्यूब 28:12-28; नीति. 2:1-6; 1 कुरि. 1:20,25,30; 2:10-14.

होते जाओ। 10तुम्हारा चालचलन यीशु
को पसन्द आने वाला हो, हर अच्छे काम
में फलदायक हो और परमेश्वर के ज्ञान
में बढ़ते हुए उन्हें हर बात में खुश करो।
11परमेश्वर की तेजोमय शक्ति से मज़बूती
पाकर, आनन्द के साथ पूरी सहनशीलता
और धीरज से स्वर्गिक पिता को धन्यवाद
देते रहो। 12पिता परमेश्वर का धन्यवाद
करते रहो जिन्होंने हमें इस लायक बनाया
कि पवित्र लोगों के साथ रोशनी में, मीरास
में हिस्सेदार हो सकें। 13परमेश्वर ही हमें
अन्धकार के शिकंजे से छुड़ाकर, अपने
प्यारे बेटे के राज्य में लाए हैं 14जिनमें हमें
यीशु के खून के द्वारा आज़ादी या अपराधों
की क्षमा मिली है।

15वह अदृश्य याहवे के प्रतिरूप और

1:10 "यीशु को पसन्द आने वाला"- इफ़ि. 4:1; 1 थिस्स. 2:12. बुद्धि और समझ अपने आप में लक्ष्य नहीं है। हमें जैसा जीना चाहिए वे हमें उसके योग्य बनाती हैं। यदि ऐसा नहीं होता है, तो वह बुद्धि कहलाए जाने योग्य नहीं।

"फलदायक"- यूहन्ना 15:1-8.

"परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते हुए"- मात्र परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान में नहीं लेकिन स्वयं परमेश्वर के ज्ञान में। फ़िलि. 3:10; 2 पतर. 3:18 से तुलना करें।

"उन्हें हर बात में खुश करो"- 2 कुरि. 5:9; गल. 1:10; 1 थिस्स. 2:4 यदि हम अपने आप को खुश करना चाहेंगे तो यीशु को कभी नहीं कर सकेंगे। जैसी जीवन शैली यीशु की थी, हमारी भी होनी चाहिए - फ़िलि. 2:5; यूहन्ना 8:29. हम क्या चाहते हैं या क्या नहीं चाहते, हमें क्या पसन्द है और क्या नहीं, इस पर हमारे कार्यों को निर्भर नहीं होना चाहिए - मत्ती 10:38-39. यदि हम इस पद के आधार पर जियें, तो, स्वर्गिक पिता के अनुसार ही हमारा जीवन होगा। (जैसा दाऊद का था - 1 शमू. 13:14 पर नोट्स देखिए।)

1:11 "मज़बूती पाकर"- इफ़ि. 3:16; फ़िलि. 4:13. "तेजोमय" शक्ति सृष्टिकर्ता की वह शक्ति है जो सच्चा आत्मिक बल दे सकती है।

पौलुस क्यों चाहता था कि विश्वासियों को यह शक्ति और बल मिले? इसलिए कि वे अद्‌भुत काम कर सकें? कि वे बड़े संदेश देने वाले हो जाएँ? नहीं लेकिन इसलिए कि वे कठिनाईयों को सह सकें, धीरज और आनन्द रखें। अपने छोटे स्थान में रहकर भलाई का जीवन जीकर परमेश्वर को सम्मान दे सकें।

"आनन्द"- फ़िलि. 1:4; 3:1; 4:4.

"सहनशीलता और धीरज"- रोमि. 8:25; 1 कुरि. 13:4; 2 कुरि. 1:6; गल. 5:22; इफ़ि. 4:2; 1 थिस्स. 5:14; इब्रा. 6:12; 10:36; 12:1; याकूब 5:10.

1:12 "धन्यवाद"- इस पत्र में यह विषय बार-बार दोहराया गया है (2:7; 3:15,17; 4:2) पूरी बाईबल में भी "लायक बनाया" - परमेश्वर की मीरास हासिल करने के लिए उन्हों ने कुछ नहीं किया। यह मनुष्य के लिए असंभव है (रोमि. 3:19-20; इफ़ि. 2:1-3; यिर्म. 13:23)। आत्मा के नए जन्म के बाद ही पिता की सन्तान बनने से यीशु के साथ मीरास के हकदार बनते हैं - यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; रोमि. 8:16-17; इफ़ि. 4:10.

"प्रकाश में"- परमेश्वर और मसीह का प्रकाश, महिमा का प्रकाश - प्रका. 21:23-24.

"मीरास"- इफ़ि. 1:14; 1 पतर. 1:4.

1:13 यहाँ दो भिन्न प्रकार के राज्य हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन में से किसी एक में है।

"अन्धकार"- प्रे.काम 26:18; लूका 22:53; इफ़ि. 6:12; यूहन्ना 3:19-20. अन्धकार के राज्य का शासक शैतान है। यीशु प्रकाश के राज्य का शासक हैं। मत्ती 4:17 में परमेश्वर के राज्य पर नोट्स देखें। वह लोगों को आज़ाद कर के अपने राज्य में लाते हैं। ऐसा वह अपनी बड़ी शक्ति और प्रकाश देकर अपनी सन्तान बनाने के द्वारा करते हैं। (2 कुरि. 4:4-6; इफ़ि. 5:8)। याहवे परमेश्वर का यह कार्य सारे विश्व में हो रहा है।

"अपने प्रिय बेटे"- मत्ती 3:17.

1:14 खून के द्वारा आज़ादी या इफ़ि. 1:7 अपराधों की क्षमा

1:15 "जो" - का अर्थ है यीशु मसीह।

"अदृश्य याहवे के प्रतिरूप"- परमेश्वर आत्मा हैं और उन्हें शारीरिक आँखों से नहीं देखा जा सकता (यूहन्ना 1:18; 1 तीमु. 1:17; 6:16; इब्रा. 11:27)। यीशु ने दिखा दिया कि परमेश्वर कैसे हैं। मानव रूप में वही परमेश्वर के समान हैं - 2:9; यूहन्ना 1:1,14; 14:9; 2 कुरि. 4:4; इब्रा. 1:3.

सारी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं। 16उन्हीं के द्वारा सब कुछ, चाहे वह स्वर्ग का है, या पृथ्वी का, दिखने वाला या न दिखने वाला, चाहे सिंहासन या राज्य या प्रधानताएँ या शक्ति, सब कुछ उन्हीं के द्वारा और उन्हीं के लिए बना है। 17वह सृष्टि से पहले थे और उन्हीं के द्वारा सब कुछ संभाला जाता है। 18वह देह अर्थात् चर्च के सिर हैं, वही शुरूआत और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठे (प्रथम) हैं, ताकि हर बात में सर्वश्रेष्ठ हों। 19इसलिए स्वर्गिक पिता को यह पसन्द आया कि सारी भरपूरी यीशु में निवास करे। 20और चाहे पृथ्वी की, चाहे स्वर्ग की, उन्हों ने सब का मेल यीशु के क्रूस पर बहे खून के द्वारा स्वयं से करा लिया।

21तुम भी एक समय अपने बुरे कार्यों द्वारा मन में बिछड़े हुए और दुश्मन थे,

---

"सर्वश्रेष्ठ"- अनेक अनुवादों में प्रथमफल शब्द इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ है सब से महान् सार्वभौमिक रोमि. 8:29; इब्रा. 1:6; 12:23; भजन 89:27. पिता का स्वभाव पुत्र में है। वह सदाकाल के लिए हैं। जैसे परमेश्वर की शुरूआत नहीं है, उनकी भी नहीं है। वह कभी "उत्पन्न" - नहीं हुए। याहवे परमेश्वर के बारे में यहूदी लोग कह सकते थे - कि ओल्ड टेस्टामैन्ट याहवे परमेश्वर 'प्रथमफल' हैं क्योंकि वह ऐसे सृष्टिकर्ता हैं जिन्हें किसी ने नहीं बनाया। यहाँ पौलुस कह रहा है कि यीशु सारी सृष्टि के ऊपर स्वामी हैं। अगले पद से स्पष्ट है कि इसका अर्थ यही है। लूका 2:11 और फ़िलि. 2:6 में नोट्स और पद देखें।

1:16 "सिंहासन"- प्रका. 4:4 से तुलना करें।

"राज्य या प्रधानताएँ"- इफ़ि. 1:21; 3:10.

"लिए"- मसीह को "पहिलौठा" कहा गया है, क्योंकि सारी सृष्टि उन्हीं के द्वारा उत्पन्न हुयी (यूहन्ना 1:3; 1 कुरि. 8:6; इब्रा. 1:2; उत्पत्ति 1:1) उन्हें प्रथमफल इसलिए नहीं कहा गया है क्योंकि वह पहले उत्पन्न हुए (या कभी उत्पन्न भी हुए)। इसलिए कि वह स्वयं हर वस्तु के बनाने वाले हैं, यह स्पष्ट है कि उनकी सृष्टि नहीं हुयी।

"उनके लिए"- केवल एक सच्चे परमेश्वर के लिए कहा जा सकता है कि सृष्टि उन्हीं के लिए है। यूनानी शब्दों का अनुवाद रोमि. 11:36 में है "उन्हीं के लिए"। वहाँ वे मात्र परमेश्वर की ओर इशारा करते हैं। यीशु छोटे ईश्वर नहीं हैं जो बड़े ईश्वर द्वारा बनाए गए। वह स्वयं परमेश्वर हैं।

1:17 "सृष्टि से पहले"- स्पष्ट-स्पष्ट मसीह जो परमेश्वर के बेटे हैं, सृष्टि के एक भाग नहीं थे। सृष्टि से पहले वह थे और उनके द्वारा ही सृष्टि का निर्माण हुआ।

"संभाला जाता है"- इब्रा. 1:3 से तुलना कीजिए। सारी सृष्टि को तहस - नहस हो जाने से वही रोके रहते हैं। वही ऐसी शक्ति हैं जो सब कुछ को एक सन्तुलन में रखते हैं। क्या परमेश्वर को छोड़ किसी और के बारे में ऐसा कहा जा सकता है?

1:18 "देह"- रोमि. 12:5; 1 कुरि. 12:12-13.

"चर्च"- मत्ती 16:18.

"सिर" - इफ़ि. 1:22-23.

"शुरूआत"- यूनानी शब्द का अर्थ है "स्त्रोत" - या जिसको पहला स्थान मिला है। मसीह वह हैं, जिनमें से उनकी मण्डली निकल कर आयी है और उन्हें सब से ऊँचा स्थान मिला है।

"हुओं...पहिलौठे"- प्रका. 1:5 इसका अर्थ मात्र यह नहीं है कि सब से पहले मौत पर जीत प्राप्त करने वाले मसीह ही थे। मौत पर विजय पाने से अधिक यहाँ पर अर्थ है। इसका अर्थ है कि यीशु का सब से ऊँचा स्थान है। उनके समान जो लोग मरने के बाद जी उठेंगे, उन सब के ऊपर वह महान हैं। रोमि. 14:9 से तुलना करें।

"सर्वश्रेष्ठ"- इफ़ि. 1:22; फ़िलि. 2:9-11. मसीह को प्रधानता मिलनी चाहिये और वे ही उसके हकदार हैं।

1:19 सृष्टिकर्ता की सारी भरपूरी मानव यीशु मसीह में थी 2:9; यूहन्ना 1:1,14.

1:20 "मेल"- परमेश्वर से दूर होकर सारा संसार पाप में गिर चुका था (रोमि. 3:19-20), परमेश्वर का क्रोध मनुष्य की बुराई के खिलाफ़ भड़क चुका था (रोमि. 1:18)। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच कोई मित्रता नहीं थी। महान परमेश्वर ने मेल कराने के लिए यीशु को भेज दिया। ऐसा यीशु ने रक्त के बलिदान से विश्व के पापों को हर लेने के लिए किया-यूहन्ना 1:29; रोमि. 5:10; 2 कुरि. 5:19; इफ़ि. 2:16.

1:21 "बुरे कार्यो द्वारा"- पाप से मनुष्य परमेश्वर का शत्रु बन जाता है।

22लेकिन यीशु ने अपने माँस-लोहू की
देह में तुम्हें किसी भी बदनामी से बढ़कर
अपनी निगाह में पवित्र और निर्दोष प्रस्तुत
करने के लिए अब तुम से मेल कर लिया
है, 23यदि तुम विश्वास में स्थिर होते, जड़
पकड़ते और जो सुसंदेश तुम ने सुना है,
उसकी आशा रखते हो, जिसे इस आकाश
के नीचे प्रत्येक प्राणी को दिया गया, और
जिसका मैं पौलुस सेवक भी बना।

24अब मैं उन दुखों (सताव) के कारण
आनन्दित हूँ, जो तुम्हारे लिए मुझे होते हैं
और मसीह के दुखों (सताव) की कमी
उनकी देह अर्थात् चर्च के लिए अपनी देह
में पूरी कर देता हूँ। 25तुम गैर यहूदियों को
अपना संदेश पूरी भरपूरी के साथ देने के
द्वारा परमेश्वर ने मुझे चर्च की सेवा करने
की ज़िम्मेदारी दी है। 26ऐसा उस रहस्य
के कारण है, जो युगों से छिपा था, लेकिन
अब उनके पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है।
27परमेश्वर ने बताना चाहा कि गैर-यहूदियों
में कीमती महिमामय रहस्य क्या है। वह
रहस्य यह है कि मसीह, जो महिमा की
आशा हैं, हम में रहते हैं। क्योंकि यह एक
भेद हैः यीशु तुम में हैं और तुम्हारा यह

"मन में"- उन्हें यह नहीं मालूम था कि वे सृष्टि के स्वामी के शत्रु हैं। क्योंकि उनके विचार और मन की इच्छाएँ परमेश्वर विरोधी थीं, वे परमेश्वर के शत्रु थे। तुलना करें रोमि. 8:5-8.

"बिछड़े हुए"- इफ़ि. 2:12; 4:18.

"दुश्मन"- रोमि. 5:10; याकूब 4:4

1:22 पद 20; इफ़ि. 2:16-18.

"बदनामी से बढ़कर"- 1 कुरि. 1:8; रोमि. 8:33.

"पवित्र"- इफ़ि. 1:4; 5:25-27.

1:23 "यदि"- पौलुस यह नहीं कह रहा है कि शायद विश्वासी, विश्वास में बने रहें। वह यह कहना चाह रहा है कि सच्चे विश्वासी क्या हैं और क्या करते हैं। उनका विश्वास में बना रहना यह दिखाता है, कि उनका मेल परमेश्वर से हो चुका है। तुलना करें 1 कुरि. 15:2; इब्रा. 3:6,14; 10:38-39; यूहन्ना 10:27; लूका 22:32; 1 यूहन्ना 2:19.

"स्थिर...पकड़ते"- सच्चा विश्वास एक मज़बूत चट्टान पर टिका होता है। (1 कुरि. 3:11; इफ़ि. 2:20) इस से विश्वासी दृढ़ हो जाते हैं।

"आकाश के नीचे"- इसका अर्थ पृथ्वी की छोर तक नहीं है या सारा विश्व भी नहीं है - मरकुस 16:15; प्रे.काम 13:47. पौलुस उन्हें बता रहा है कि उस क्षेत्र में सुसमाचार कितना फैल चुका था।

1:24 "उन दुखों - (सतावों) के कारण जो तुम्हारे लिये मुझे होते हैं"4:10,18; 2 कुरि. 1:5-6; इफ़ि. 3:1-13. पौलुस दुःख इसलिए उठा रहा था क्योंकि वह सुसमाचार देता था, लोगों को यीशु का शिष्य बनाता था और यीशु के चर्च को इस पृथ्वी पर बनाना चाहता था। वह आनन्दित इसलिए नहीं था क्योंकि सताव अच्छा लगता था, लेकिन इसलिए कि यीशु और उनके लोगों के लिए जी रहा था। इसे वह एक अच्छा अवसर समझता था-फ़िलि. 1:29; 3:10; 1 पतर. 4:13-16 से तुलना करें।

"कमी"- क्या क्रूस पर मसीह के सताव में कुछ कमी थी? नहीं, बिल्कुल नहीं। दुनिया के अपराधों के लिए बलिदान क्या अधूरा था? नहीं। पौलुस इसके विषय भी नहीं कह रहा है। यह सच है कि हमारे अपराधों के लिए मसीह एक ही बार मर गए और सब कार्य को पूरा कर डाला-यूहन्ना 19:30; इब्रा. 10:10,14; 1 पतर. 3:18. यीशु अभी चर्च को बना रहे हैं (मत्ती 16:18; इफ़ि. 2:19-22)। अपने सेवकों को उनके साथ कार्य करने का अवसर दे रहे हैं। इस संसार में इसका अर्थ है समस्याएँ सताव, दुख और परेशानियाँ। वे अभी समाप्त नहीं हुयी हैं। अभी भी उनकी "कमी" - है। मण्डली (चर्च या कलीसिया) के लिए और उनके साथ दुख उठाने की आशीष को वर्तमान समय में अपने सेवकों के लिए रखा है।

1:26 इफ़ि. 3:2-9; रोमि. 16:25-27.

"पवित्र लोगों पर"- रोमि. 1:7.

1:27 "कीमती"- इफ़ि. 3:8 इन सभी धन की तुलना में, मनुष्य द्वारा बनाया गया हर एक संत निर्धन है।

"महिमा की आशा"- रोमि. 5:2; 8:18. यदि मसीह हम में नहीं हैं तो हमारे पास मुक्ति और परमेश्वर की महिमा को देखने का कोई ठोस आधार नहीं है।

"यीशु तुम में"- यूहन्ना 17:23; रोमि. 8:9-10; 2 कुरि. 13:5; प्रका. 3:20.

भरोसा भी है कि तुम उनकी महिमा के हिस्सेदार बनोगे।

28इसलिए हम उपदेश और चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान सहित हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को (परमेश्वर के सामने) मसीह यीशु (के साथ रिश्ते) में सिद्ध उपस्थित करें। 29इसी लक्ष्य के कारण उनकी सामर्थ के अनुसार, जो मुझ में शक्तिशाली रीति से काम कर रही है, तन मन लगाकर मेहनत करता हूँ।

2 जिन्होंने मेरा मुँह नहीं देखा है और जो लौदीकिया में हैं, उन्हें मैं यह बताना चाहता हूँ, कि तुम्हारे लिए मुझे कितना अधिक संघर्ष करना पड़ता है। 2तुम प्रेम से आपस में गठकर अपने मन में प्रोत्साहित हो, ताकि समझ के पूरे आश्वासन की दौलत और परमेश्वर पिता और यीशु मसीह के रहस्य के पूरे ज्ञान में प्रवेश कर सको। 3यीशु मसीह में बुद्धि और ज्ञान का सारा खज़ाना छिपा हुआ है। 4मैं यह इसलिए कहता हूँ, ताकि भरमा देने वाले शब्दों

1:28 प्रे.काम 20:20-24 से तुलना करें.

"सारे ज्ञान"- वह ज्ञान जो उसे परमेश्वर ने दिया था - 1 कुरि. 1:30; 2:7,10,12,16. वह अपनी बुद्धि पर घमण्ड नहीं कर रहा था। उसने यह प्रार्थना की कि उन्हें पूरी बुद्धि प्राप्त हो - पद 9. वह जानता था, कि इसे पाना संभव था, क्योंकि यह उसे मिली थी। विश्वासी भी इसे पा सकते हैं - याकूब 1:5.

"सिद्ध"- 2 कुरि. 11:2; इफ़ि. 4:12-15. मत्ती 5:48; फ़िलि. 3:12,15; इब्रा. 6:1; 10:14.

1:29 पौलुस के लिए इफ़ि. 3:20 मात्र एक सिद्धान्त नहीं था। देखें कि पौलुस के जीवन में परमेश्वर की शक्ति कार्य कर रही थी, किन्तु यह आसान प्रक्रिया नहीं थी। सच्चाई तो इसके विपरीत थी - इसका अर्थ था परिश्रम और संघर्ष (यही यूनानी शब्द 4:12; लूका 13:24; 1 कुरि. 9:25 में इस्तेमाल किया गया है।)

2:1 "लौदीकिया"-प्रका. 3:14.

"संघर्ष"- 1:29 चाहे विश्वासियों से पौलुस की मुलाकात हुयी हो या नहीं, वह उनके लिए मध्यस्थी में संघर्ष किया करता था। उसे यह मालूम था कि मसीह के लिए प्रत्येक विश्वासी कीमती है। वह संसार के सामने यीशु के नाम को रखता था।

2:2 पौलुस की प्रार्थनाओं में पाई जाने वाली सच्चाई का एक और नमूना 1:9.

"प्रेम...गठकर"- रोमि. 12:10; इफ़ि. 4:2-3; फ़िलि. 2:2.

"प्रोत्साहित"- पौलुस ने इसे आवश्यक सेवकाई समझा था।

"समझ"- दौलत के बारे में उसके विचार क्या थे यह भी देखिए। तुलना करें नीति. 3:13-14; 8:10,19; 16:16.

"परमेश्वर पिता और यीशु मसीह"- जब तक परमेश्वर न बताएँ, कोई भी मसीह को जान नहीं सकता। 2 कुरि. 4:4-6 इसी तरह से जब तक मसीह प्रकट न करें, कोई परमेश्वर को जान नहीं सकता- मत्ती 11:17. मसीह और परमेश्वर पिता का ज्ञान हर प्रकार के ज्ञान से कहीं अधिक बड़ा धन है। तुलना कीजिए फ़िलि. 3:7-11; यूहन्ना 17:3.

"रहस्य"- परमेश्वर से मिलने वाला प्रकाशन मत्ती 13:11 की टिप्पणी देखें।

2:3 यदि हम मसीह को जानते हैं, तो हम सारी बुद्धि के स्त्रोत को जानते हैं। "सारा" शब्द पर ध्यान दें। असीमित बुद्धि मसीह में है। यदि हम यीशु को नहीं जानते हैं, तो हम में आत्मिक बुद्धि की कमी है। चाहे दर्शनशास्त्र का ज्ञान हो और विश्व का ज्ञान भी। देखें 1 कुरि. 1:20-21. जिसे लोग मुक्ति के लिए 'ज्ञान मार्ग' कहते हैं वह घमण्ड और कठोरता का रास्ता होता है न कि मुक्ति का।

"छिपा हुआ"- मसीह की बुद्धि और ज्ञान सभी को समझ में नहीं आते हैं। वे सतह पर नहीं पाए जाते हैं। जिस तरह से लोग छिपे हुए खज़ाने की खोज करते हैं उसी तरह की लगन हमारे अन्दर होनी चाहिए। नीति. 2:1-6 से तुलना करें। पूरे मन से आत्मिक समझ के लिए खोज का उदाहरण भजन 119 में है। वे लोग प्रसन्न होंगे जो ऐसे लोगों की नकल करेंगे।

2:4 अपने "भरमा देने वाले शब्दों" से दूसरों को मजबूर करने वाले और अपने आप को धोखा देने वाले लोग हमें दिखते हैं। ऐसे लोग मनुष्य द्वारा बनाए गए तरीकों, दर्शनशास्त्र की बातों या धार्मिक बातों को बनाते हैं जो बहुत सही और अच्छी लगती हैं। मसीह पर विश्वास, सत्य की पहचान और उस से मिलने वाली सच्चाई के द्वारा हम अपने आप को गलत रास्तों से बचा सकते हैं।

से तुम्हें कोई धोखा न दे सके। 5हालाँकि मैं देह में तुम्हारे साथ नहीं हूँ, फिर भी मैं आत्मा में तुम्हारे साथ हूँ। मैं मसीह में तुम्हारे मजबूत विश्वास की स्थिरता और अनुशासन को देखकर खुश हूँ।

6इसलिए, जैसे तुम ने प्रभु यीशु मसीह को अपना मान कर स्वीकार कर लिया है, उसी तरह आगे बढ़ते जाओ। 7जैसा तुम्हें सिखाया गया है, विश्वास में मजबूती पकड़ते, जड़ पकड़कर मज़बूत होते हुए धन्यवाद में उमड़ते चलो।

8सावधान रहना, ताकि तुम्हें कोई

2:5 "आत्मा में"-1 कुरि. 5:3-4. पौलुस यह नहीं सिखा रहा है कि उसकी आत्मा देह को छोड़कर दूसरे स्थानों में जा सकती है, इसका अर्थ है उसका मन और विचार उन लोगों और उनके कामों पर लगे रहते थे। वह सूचना जो उनके बारे में उसे मिला करती थी, उस से उसे यह आशा थी कि वे लोग कानों को अच्छे लगने वाले तर्क से धोखे में नहीं पड़ेंगे।

"मजबूत विश्वास की स्थिरता"- इस से हमें योग्यता मिलती है, जिससे कि हम धोखे वाली शिक्षा और शैतान की प्रत्येक चालाकी के विरोध में खड़े हो सकें (2 कुरि. 1:24; इफ़ि. 6:16; 1 पतर. 5:9; 1 यूहन्ना 5:4)।

"अनुशासन"- 1 कुरि. 14:40

2:6 मत्ती 1:1 में "मसीह" और "यीशु" पर और लूका 2:11 में 'प्रभु' पर जो नोट्स हैं उन्हें देखें। इतिहास के यीशु के बारे में उन्हों ने सत्य को प्राप्त किया था। उन्हों ने कुछ रहस्यमय सच्चाई को या काल्पनिक यीशु को नहीं जाना था। वे ऐसे यीशु पर विश्वास करते थे जिनके पास देह थी और जिन्हें परमेश्वर द्वारा अभिषेक दिया गया था और जो स्वर्ग से थे। यह ध्यान दें कि 'प्रभु' को उन्हों ने विश्वास से स्वीकार किया था। उन्हें यही सत्य सिखाया गया था, जिस पर उन्हों ने विश्वास कर भी लिया था और अपने आपको सुपुर्द किया था। इसी विश्वास से उन्हें बने रहना चाहिए (2 कुरि. 5:7)।

"आगे बढ़ते जाओ"- या जीवन जियो - इफ़ि. 2:10 में नोट्स देखें।

2:7 "विश्वास में"- मसीह के सत्य में उनको और अधिक मज़बूती से स्थापित होना चाहिए और विश्वास करना चाहिए।

"जड़ पकड़कर मज़बूत होते हुए"- इफ़ि. 3:17 से तुलना करें। पौधों और वृक्षों से विश्वासियों की तुलना की जा सकती है - मत्ती 12:33; 13:1-30; भजन 1:3 मसीह उस अच्छी भूमि के समान हैं, जहाँ, उनकी जड़े हैं। उनकी जड़ें नीचे हैं, लेकिन धीरे-धीरे बढ़ते जा रहे हैं। वे एक इमारत के समान हैं, यीशु उनकी नेव हैं, जिसके ऊपर वे बनाए जा रहे हैं - इफ़ि. 2:19-22; 1 पतर. 2:4-5; 1 कुरि. 3:11.

"धन्यवाद"- इफ़ि. 5:4,20; 1 थिस्स. 5:18.

2:8 "सावधान रहना"- एक दुर्बोध खतरा था - गलत विचारधारा के द्वारा फँसने का खतरा। 16-23 में पौलुस उस मत की बात करता है, जिसका सामना कुलुस्से के लोग कर रहे थे। जिन मतों से आज हमारा परिचय होता है वे उन्हीं के समान या भिन्न हो सकते हैं, किन्तु हमें भी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। प्रत्येक पीढ़ी में एक बात पक्की है, वह यह है - कोई भी दर्शन या धार्मिक विचारधारा जो यीशु मसीह को अलग रखती है, खोखली और धोखा देने वाली है।

दर्शन उन बातों की भूख है जिसे मनुष्य ज्ञान कहते हैं। यह तर्क एवं विवाद के द्वारा सत्य और वास्तविकता के स्वभाव को प्राप्त करने का एक प्रयास है। मसीह ही सत्य हैं और सारा आत्मिक ज्ञान उन्हीं में छिपा हुआ है। दर्शनशास्त्र के तरीके लोगों को उन तक नहीं पहुँचाएँगे। बाईबल वास्तविकता की प्रकृति का प्रकाशन है। आत्मिक बातों के विषय में जिस सत्य को परमेश्वर चाहते हैं, कि मनुष्य जाने इसी में है। दर्शन शास्त्र मात्र कल्पना है। यह सच्चे परमेश्वर तक कभी नहीं पहुँचाएगी। दर्शन शास्त्री प्रायः एक दूसरे के विरोध में कहते हैं और ऐसी बातों के विषय चर्चा करते हैं, जो उनकी बुद्धि से परे हैं और उन्हें वे नहीं जानते।

यीशु मसीह जो परमेश्वर की बुद्धि हैं (1 कुरि. 1:24), हमारे सामने खड़े हैं। उन्हीं में सारी बुद्धि और ज्ञान के खज़ाने हैं। यह दिलचस्प बात है कि 'दर्शन' शब्द पूरी बाईबल में यहीं पर आया है। इब्रानी और यूनानी भाषा में (प्रे.काम 17:18) दर्शनशास्त्री शब्द का उपयोग मात्र एक बार हुआ है - 1 कुरि. 1:20. इस तरह से बाईबल के लेखक परमेश्वर की आत्मिक बुद्धि के क्षेत्र में दर्शनशास्त्र के बेफ़ायदेमन्द को प्रगट करते हैं। यदि सृष्टिकर्ता किसी बात को अनदेखा करते हैं या उसको स्वीकार नहीं करते तो हम कह सकते हैं, कि जिन बातों को परमेश्वर हमें सिखाना चाहते हैं, उनके विषय में इसका कोई योगदान नहीं है, "बर्बाद" यूनानी में "तुम्हारा शिकार न करे" या "तुम्हें बन्दी न बनाए"।

दर्शनशास्त्र और खोखले धोखे से, जो मनुष्य की परम्परा और संसार के शुरूआती ज्ञान पर आधारित है परन्तु मसीह पर नहीं, बर्बाद न कर दे।

9मसीह में परमेश्वर की सारी भरपूरी दैहिक रीति से वास करती है। 10जो सारी प्रभुसत्ता और अधिकार के प्रधान हैं, उन में तुम पूरे (भरपूर) किए गये हो। 11उन्हीं में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता है, यह मसीह द्वारा किया गया आत्मा का खतना है, जिस में अपराधों का शरीर हटा दिया जाता है। 12और तुम बपतिस्मे में मसीह के साथ गाड़े गए, उन्हीं में परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा विश्वास से जिलाए भी गए, जिन्होंने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया है।

13तुम अपने अपराधों और अपनी देह की कमियों में मरे हुए थे, उन सारे अपराधों को क्षमा करते हुए परमेश्वर ने यीशु के साथ तुम्हें भी जिलाया। 14वह लेखा जिसमें

"मनुष्य की परम्परा"- जो दर्शन कुलस्से के मसीहियों को परेशान कर रहा था, वह मनुष्य की परम्परा (बोली गयी या लिखी हुयी) और संसार से कुछ सीखी हुयी बातों पर आधारित था। ये दर्शनशास्त्री मात्र नींव की बातों (लेकिन शायद गहरे विचार वाली बातों पर घमण्ड करते थे) पर टिके हुए थे। उनकी विचारधारा मसीह पर आधारित नहीं थी, इसलिए "खोखला धोखा" - थी। क्योंकि मसीह पर यह विचारधारा स्थिर नहीं थी, इसलिए सच्चा ज्ञान वहाँ नहीं था। इसलिए वह देने का वायदा कर रही थी, जिसे दे नहीं सकती थी। जैसा यह पहले सत्य था, आज भी है। आज बहुत से मत और दर्शन हैं जो कुछ परम्पराओं, पुराने धार्मिक लेखों और मात्र मनुष्य की कल्पना पर टिके हैं। क्योंकि वे मसीह को इन सब से बाहर रखते है, जो परमेश्वर का सच्चा ज्ञान है। ये सभी मत, खोखले और धोखे वाले हैं।

2:9 1:19 देखें। इसका अर्थ यह है कि सच्चे परमेश्वर यीशु में ही होकर आए। वह सृष्टिकर्ता हैं। अलौकिक स्वभाव की सारी भरपूरी उनकी देह में हैं। फ़िलि. 2:6; लूका 2:11 देखें।

2:10 परमेश्वर की आत्मा से "मसीह" में विश्वासी स्वर्गिक पिता से जुड़े हुए हैं - यूहन्ना 17:20-23; रोमि. 6:5; 1 कुरि. 12:12-13; इफ़ि. 1:4,7,11,13. इसलिए उन्हें बुद्धिमान और पवित्र जीवन के लिए जो कुछ चाहिए वह सब उन के पास मसीह में है। जो पूरापन (परिपूर्णता) उन्हें दी गयी है वह परमेश्वर की जिम्मेदरि नहीं है। मनुष्य सृष्टिकर्ता कभी नहीं बन सकता न ही उनके गुणों को हासिल कर सकता है (उत्पत्ति 1:26; भजन 9:20; यशा. 40:6-8,12-16)। मसीह में परमेश्वर ने विश्वासियों को शर्तहीन कृपा, शक्ति और बुद्धि दी है। उन्हें यह बातें समझनी चाहिए और अपने लिए उन्हें प्राप्त कर के इस्तेमाल करनी चाहिए। यूहन्ना 1:16-18; इफ़ि. 3:19; और 5:18 से तुलना करें।

"सारी"- इफ़ि. 1:20-23; फ़िलि. 2:9-11.

2:11 "खतना हुआ है"-खतने की यहूदी रीति के सच्चे आत्मिक अर्थ की ओर पौलुस इशारा कर रहा है । रोमि. 2:28-29; फ़िलि. 3:3 देखें। (यूनानी में शरीर "सार्क्स" - रोमि. 7:5 की टिप्पणी देखें) इसको को कभी भी अच्छा नहीं बनाया जा सकता है। इसे मरने की जरूरत है। हमारे स्थान पर मरने के द्वारा मसीह ने इसे मार डाला है। उन्हों ने विश्वासियों के साथ इसके रिश्ते को तोड़ डाला है - 3:3; रोमि. 6:6; 7:17; 8:9 उनके पास एक नयी आत्मा है, एक नया स्वभाव है। उन्हें पुराने जीवन से अलग कर दिया गया है - 3:9-10; 2 कुरि. 5:17. इसका अर्थ यह नहीं है, कि उनके भीतर का वास्तविक पापमय स्वभाव काम नहीं कर रहा है - रोमि. 7:17-18; गल. 5:17.

2:12 "बपतिस्में...गए"- रोमि. 6:3-4 देखिए।

"उन्हीं...विश्वास से"- रोमि. 4:20-21,24 से तुलना करें। हम उन परमेश्वर पर भरोसा करते है, जिन्होंने मसीह को शारीरिक रीति से जिलाकर अपनी ताकत दिखायी, वही हमें आत्मिक मौत से जिलाते हैं। यूहन्ना 5:24; रोमि. 10:9-10.

"जिलाए भी गए"- इफ़ि. 2:6.

2:13 "क्षमा करते हुए"- 1:14; इफ़ि. 1:7

"मरे हुए...जिलाया"- इफ़ि. 2:1,5.

2:14 इफ़ि. 2:15 "हमारे विरोध में" परमेश्वर का नियमशास्त्र लोगों के विरोध में इसलिए था क्योंकि, सभी एक मापदण्ड (पैमाने) के नीचे थे। उन्हों ने इसका पालन नहीं किया था। नियमशास्त्र (या परमेश्वरीय मापदण्ड) की यह माँग थी कि सज़ा और मौत मिले -गल. 3:10; रोमि. 3:19; 4:15; 7:12-14.

हमारे विरोध में आरोप साबित हो चुके थे, उन सब को यीशु ने क्रूस पर ठोंक कर दूर कर दिया और पूरी तरह से मिटा दिया। 15यीशु ने प्रधानताओं (दुष्ट शासकों) और शक्तियों (अधिकारियों) को लूटकर, क्रूस द्वारा उन पर जीत हासिल कर के उन सभी का सरेआम तमाशा बनाया, और क्रूस के कारण उन पर जयजयकार सुनाई।

16इसलिए खाने-पीने, त्यौहार मनाने, या नये चाँद को मानने या सब्त के सम्बन्ध में तुम्हारे लिए कोई दूसरा व्यक्ति फैसला न करे। 17ये सभी आने वाली बातों की एक छाया हैं, सब से अधिक महत्व की बात यीशु हैं। 18स्वयं की दीनता, स्वर्गदूतों की उपासना, देखी हुई बातों और अपने शारीरिक मन के द्वारा बेकार में घमण्ड से

"क्रूस पर ठोंक कर"- मसीह ने हमारा स्थान लिया और सारे दण्ड और हमारे विरोध में नियमशास्त्र के शाप को सहा गल. 3:13. वह नियमशास्त्र के शाप के आधीन मर गए और सभी विश्वासी उन्हीं के साथ मर चुके हैं। (जहाँ तक परमेश्वर के दृष्टिकोण का सवाल है)। क्योंकि वे नियमशास्त्र के लिए मर चुके हैं, यह तो ऐसा है कि उनके लिए नियमशास्त्र क्रूस पर चढ़ाया गया और वह मर चुका है रोमि. 7:1-6.

2:15 "प्रधानताओं और शक्तियों"- यहाँ पौलुस शैतान और दूसरी दुष्ट आत्माओं की ओर इशारा करता है (इफ़ि. 6:12)। उन्हों ने क्रूस के द्वारा मसीह को नाश करना चाहा था - लूका 22:53. इसका उल्टा हो गया, मसीह ने क्रूस की मौत और जी उठने के द्वारा उनके ऊपर जीत हासिल की और उनके वश से छुड़ा लिया यूहन्ना 12:31; इब्रा. 2:14-15.

2:16-23 पौलुस अब झूठे शिक्षक के उन तरीकों के बारे में बताता है, जिसके द्वारा "प्रभावशाली शब्दों" से, वे कुलुस्से के लोगों को धोखा दे रहे थे (पद 4)।

"खाने-पीने"- लैव्य. 11:1; मरकुस 7:18-19; प्रे.काम 10:9-16; रोमि. 14:1-4 के नोट्स देखें।

"त्यौहार"- यहाँ यहूदियों के विशेष दिनों और समयों के बारे में इशारा है। विश्वासी अब ओल्ड टैस्टामैन्ट के नियमों और रीतियों के आधीन नहीं हैं। रोमि. 14:5-8; गल. 4:10-11 में "सब्त"- के विषय में नोट्स देखिए। यह उस लिखित 'नियमावली' के भाग हैं, जिन्हें यीशु ने क्रूस पर ठुकवा दिया- पद 14.

2:16 "कोई दूसरा व्यक्ति"- यहाँ वह उन यहूदियों की ओर इशारा कर रहा है जो अभी तक "लिखित नियमों को उनके शर्तों के साथ जुड़े हुए हैं।" (मूसा के नियम शास्त्र - पद 14)

2:17 "छाया"-इब्रा. 8:5; 10:1.

"महत्व की"- जो सत्य मसीह का है, ओल्ड टेस्टामॅन्ट के निमय और रीति-विधियाँ उन्हीं की ओर संकेत करती हैं।

2:18 अब पौलुस एक और खतरे के बारे में कहता है। कुलुस्से में कुछ लोग एक झूठे धार्मिक रास्ते पर चले जा रहे थे। वे अपनी बनायी हुयी दीनता के बारे में घमण्डी थे और स्वर्गदूतों की पूजा करते थे। उनकी यह उपासना और नाम की दीनता दोनों ही उनके जीवन में थी। वे इस तरह कह सकते थे कि मनुष्य स्वयं सृष्टिकर्ता तक पहुँच नहीं सकता सृष्टिकर्ता उन से कहीं अधिक महान हैं। इतने अधिक पवित्र हैं कि मनुष्य की पहुँच उन तक हो ही नहीं सकती। इसलिए दूसरे मध्यस्थों के द्वारा मनुष्य को उनकी आराधना करनी चाहिए। ये मध्यस्थ स्वर्गदूत हैं। आज भी कुछ धार्मिक लोग इसी तरह का तर्क सामने रखते हैं। स्वर्गदूतों के बजाए वे सन्त कहलाए जाने वाले उन लोगों की पूजा करते हैं, जो मर चुके हैं। वे ऐसों को मध्यस्थ समझकर यह चाहते हैं कि वे उनके लिए प्रार्थना करें। इसके अलावा और ऐसे लोग हैं जो सृष्टिकर्ता की जगह दूसरे ईश्वर कहलाए जाने वालों की उपासना करते हैं। यह सब परमेश्वर के वचन के विरोध में है और बाईबल में इसका वर्णन है - निर्ग. 20:1-6; यूहन्ना 14:6; 1 तीमु. 2:5; इब्रा. 10:19-22.

"स्वयं की दीनता"-वह दीनता नहीं, जिसे पवित्र आत्मा किसी विश्वासी के जीवन में उत्पन्न करता है।

"शारीरिक मन"- उसकी देह का मन जो बुरा है - रोमि. 8:5-7. जिन लोगों के विषय यहाँ कहा गया है, उनका बुरा स्वभाव, और उपासना और विचार धारा उसी बुरे मन की उपज है। इसके बावजूद वे अपने आप को बहुत आत्मिक (परमेश्वर के निकट) समझते होंगे।

"घमण्ड"- यह खुद की उत्पन्न की गई दीनता है। वह वास्तव में घमण्ड है जो बाहर से दीनता दिखती है।

भरने के द्वारा तुम्हें कोई तुम्हारे ईनाम से अलग न रखे। 19ऐसा व्यक्ति उस सिर अर्थात् यीशु को पकड़े नहीं रहता, जिससे सारी देह (चर्च) जोड़ों और तन्तुओं के द्वारा पाली पोसी जाकर एक होकर परमेश्वर से उन्नति पाती जाती है।

20क्योंकि यदि शुरुआती बातों के लिए तुम मसीह के साथ मर गये, तो सांसारिक लोगों की आज्ञा और सीख के मुताबिक, 21उन नियमों के गुलाम क्यों बनते हो? जैसे कि यह मत छूओ, वह मत चखो, इन बातों पर अमल मत करो। 22ये सभी बातें जो मनुष्यों की आज्ञाओं और सिद्धान्तों के अनुसार हैं उपयोग के साथ नाश हो जाने वाली हैं। 23इन बातों में ज्ञान के दिखावे के साथ अपने चुने हुए भक्ति के तरीके, झूठी दीनता और देह को कष्ट देना है, ये बातें शरीर की लालसाओं को नहीं रोक पाती।

3 इसलिए कि तुम मसीह के साथ जिलाए गए हो, तो स्वर्गिक वस्तुओं को चाहो, जहाँ परमेश्वर के अधिकार के साथ मसीह हैं। 2दुनिया की नहीं परन्तु स्वर्ग की वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। 3क्योंकि तुम

"ईनाम"- 1 कुरि. 9:24; 2 तीमु. 2:5; जिस दौड़ में विश्वासी दौड़ रहे हैं, उसमें कोई उन्हें न रोक पाए। यदि ऐसा होता हे तो वे उस इनाम को खो सकते हैं जिसे वे पा सकते थे।

2:19 "सिर अर्थात् यीशु को पकड़े नहीं रहता"- कुलुस्से में रहने वाले झूठे शिक्षक मसीह के नियन्त्रण में नहीं थे। वे मसीह की शिक्षा में नहीं बने हुए थे। इसीलिए वे गुमराह हो गऐ थे। शायद वे यीशु के शिष्य होने का दावा करते थे किन्तु उनकी शिक्षा से स्पष्ट था कि वे नहीं थे।

"उन्नति"- इफ़ि. 4:16.

2:20 "प्रारम्भिक...लिए"- (पद 8; गल. 4:3) वे बातें जो पुरानी सृष्टि से सम्बधित हैं न कि मसीह में नयी आत्मिक सृष्टि से।

"मसीह...गये" - रोमि. 6:6,8; गल. 2:20.

2:21-22 कुछ लोग यह समझते थे (अभी भी समझते हैं कि भोजन, पेय आदि के सम्बन्ध में नियम और तरीके आत्मिक जीवन का केन्द्र हैं।

मसीह पर विश्वास करने वाले उन सभी के लिए मर चुके हैं।)

2:23 "ज्ञान के दिखावे"- पृथ्वी के अधिकांश लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए यह काफ़ी है। वे उस सच्चे ज्ञान को प्राप्त नहीं करना चाहते जो परमेश्वर से मिलता है। यह उनके पास है भी नहीं।

"अपने चुने हुए भक्ति के तरीके"- बहुत से लोग अपने तरीके से उपासना करना चाहते हैं और परमेश्वर के तरीके को नज़रअन्दाज़ करते हैं। मत्ती 15:7-9; यूहन्ना 4:23-24; निर्ग. 20:1-6; भजन 29:2; नीति. 14:12.

"देह...देना"- कुछ लोग यह सोचते हैं कि अपनी देह को कष्ट देने से, उसके साथ बुरा व्यवहार करने से और सन्यास लेने से वे आत्मिक बन जाएंगे। संयम और देह को वश में रखना भला तो है, (1 कुरि. 9:27) किन्तु इसे हासिल करने के सभी तरीके परमेश्वर को स्वीकार नहीं है। पौलुस जिन बातों के विषय कहता है वे और न दूसरी बातें, मनुष्य को आत्मिक बना सकती हैं या पाप पर जीत दिला सकती हैं। केवल एक ही रास्ता है और वह यीशु मसीह के द्वारा है। इस विषय पर पौलुस अगले अध्याय में सिखाता है।

3:1-2 कुलुस्से में रहने वालों पर झूठे शिक्षक कुछ दबाव ला रहे थे, जब कि मनुष्य की ज़रूरत है नया आत्मिक जीवन (2:4,8,16-23)।

"मसीह के साथ जिलाए गए"- 2:13; रोमि. 6:4-5; इफ़ि. 2:4-6. विश्वासी मसीह में मर चुके हैं, जिन्होंने सभी के लिए अपने प्राण दिए थे। विश्वासी उनके साथ जिलाए गए। यह एक जीवित अनुभव हो गया, जब उन्हों ने विश्वास से यीशु को स्वीकार किया और नया जन्म पाया - यूहन्ना 1:12-13. मसीह पूरे अधिकार के साथ स्वर्ग में हैं - इफ़ि. 1:20; फ़िलि. 2:9; इब्रा. 1:3. वहीं पर प्रत्येक विश्वासी के विचार और इच्छाएँ होनी चाहिए। यीशु को खुश करने और पवित्र जीवन जीने का एक यही एक तरीका है। फ़िलि. 4:8; रोमि. 8:5 आदि से तुलना करें।

"स्वर्गिक वस्तुओं"- फ़िलि. 3:19; 1 यूहन्ना 2:16-17.

"चाहो"- या ध्यान लगाओ।

पिछले जीवन के लिए मर चुके हो और मसीह द्वारा परमेश्वर में तुम्हारा आत्मिक जीवन छिपा हुआ है। 4जब यीशु जो हमारा जीवन हैं दिखाई देंगे, तब तुम भी उनके साथ बड़े तेज में प्रगट होगे।

5इसलिए इस पृथ्वी पर जो तुम्हारी शारीरिक लालसाएँ हैं, जैसे यौन कामुकता, अशुद्धता, बुरी लालसा और लालच (जो मूर्तिपूजा है), इन सब को मार डालो। 6इन्हीं कारणों से स्वर्गिक पिता का क्रोध उनकी आज्ञा न मानने वालों पर आता है। 7एक समय था, जब तुम इन सब में जी रहे थे और अपना सारा समय इन्हीं में गवाँ रहे थे। 8किन्तु अब तुम्हें ये सभी बातें अर्थात् क्रोध, रोष, कड़वाहट, निन्दा, मुँह से निकलने वाली गंदी बातें दूर कर देनी चाहिए। 9एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुम ने अपना पुराना जीवन उसके कामों सहित दूर कर दिया है। 10तुम ने अब नया जीवन शुरू किया है, जो परमेश्वर की समानता के ज्ञान में नया होता जाता है। 11जहाँ यूनानी-यहूदी, खतनासहित-खतनारहित, बारबेरियन-स्कूती, गुलाम-आज़ाद में कोई अन्तर नहीं है। मसीह सब बातों में सब से

3:3 "जीवन"- वह नया, आत्मिक जीवन जिसे परमेश्वर ने विश्वासियों को दिया है।

"मर चुके हो"- रोमि. 6:2-4,8; गल. 2:20.

"छिपा हुआ है"- इस पृथ्वी पर कोई इसे देख नहीं सकता। इसे नाश करने के लिए कोई दुश्मन नहीं आ सकता (यूहन्ना 10:28-29)। हालाँकि मसीह में यह खज़ाना बहुत दूर लग सकता है, यह बहुत निकट और सुरक्षित है।

3:4 मसीह सभी विश्वासियों के जीवन हैं - वह यह कि उनके पास यह नया, आत्मिक जीवन है क्योंकि मसीह उन में है, (1:27; यूहन्ना 11:25; रोमि. 8:9-10; 1 यूहन्ना 5:11-12,20) वे उन्हीं से जुड़े हुए हैं। (यूहन्ना 17:20-23), विश्वासियों की पूरी देह में उन्हीं का जीवन बह रहा है।

"तेज में"- यूहन्ना 17:24; रोमि. 5:2; 8:17-18; 1 यूहन्ना 3:1-3.

"प्रगट"- 1 तीमु. 6:14; 2 तीमु. 4:1,8; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28; 1 पतर. 5:4; 1 यूहन्ना 2:28; 3:2.

3:5 "शारीरिक लालसाएँ"- यहाँ जिन बुराईयों के विषय पौलुस सूची देता है वे जन्म ही से इस तरह जुड़ी हैं, जैसे आँखें, हाथ पैर देह से जुड़े हैं। बड़ी निर्दयता से उन से निबटना चाहिए मत्ती 5:29-30.

"लालच" या और "अधिक चाहना"- एक दुष्टता जो मसीहियों में भी बहुत पायी जाती है।

"मूर्तिपूजा"- इफ़ि. 5:5. हमारे भीतर (मन की) मूर्तियाँ घृणित और खतरनाक हैं, जैसे बाहरी मूर्तियाँ हैं। देखिए, यहेज. 14:3-4.

"मार डालो"- पद 1-4 में जो महान सत्य हमारे सामने है, उन्हीं के ऊपर पौलुस अपनी आज्ञा की नेंव रखता है। रोमि. 12:1; इफ़ि. 4:1; और 5:1 से तुलना करें। मसीह में परमेश्वर ने विश्वासियों को नया जीवन दिया है। उनके पास अद्भुत भविष्य है। इसी आधार पर उनका व्यवहार होना चाहिए। उन्हें अपने जीवन में से दुष्टता को निकालना चाहिए, हालाँकि पापमय स्वभाव को निकाल फ़ेंकना असंभव है। यदि यह संभव न हुआ होता तो, परमेश्वर के आत्मा से पौलुस ने विश्वासियों को यह करने के लिए न कहा होता। झूठे शिक्षकों (2:23) के किसी तरीके से वे लोग यह नहीं कर सकते थे। मसीह द्वारा दी गयी सामर्थ से, मसीह और उनकी आत्मा से वे यह कर सकते थे। देखें रोमि. 8:4,13,14; गल. 5:22-25; इफ़ि. 3:16-20.

3:6 "क्रोध"- इफ़ि. 2:1-3; रोमि. 3:9-19.

3:8 "दूर कर देनी"- इफ़ि. 4:22-32.

3:9-10 "झूठ मत बोलो"- इफ़ि. 4:25; भजन 15:2; नीति. 12:22.

3:10 "शुरू किया है"- जब लोग मन बदलते हैं। (मत्ती 3:2) और यीशु पर विश्वास लाते हैं, वे पुराने जीवन को त्यागते हैं, नए जीवन को शुरू करते हैं। तभी वे एक नया स्वभाव पाते हैं, नए लोग बन जाते हैं - 2 कुरि. 5:17. यह नया स्वभाव परमेश्वर का "स्वरूप है" -यह आत्मिक, पवित्र और धर्मी है (इफ़ि. 4:22-24)। प्रत्येक विश्वासी को अपनी गलतियों, दुष्टता बुरी आदतों, बुरी इच्छाओं से निबटना है। इसका तरीका है कि उन्हें मार डालें।

3:11 गल. 3:28 सभी विश्वासियों के पास एक नया स्वभाव (नया मन) है, वे मसीह (पवित्र आत्मा) के साथ एक हो गए हैं।

बढ़कर हैं और वह हम सब में रहते हैं।
12इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की
तरह पवित्र और बहुत प्रिय लोगो, अपने
आप को कोमल करूणा, मन की दीनता,
नम्रता और धीरज से ढाँक लो। 13यदि
किसी से झगड़ा हो जाए, तो एक दूसरे
की सह लो और माफ़ करो। जिस तरह से
मसीह ने तुम्हें माफ़ किया, तुम्हें भी एक
दूसरे को करना चाहिये। 14इन सभी बातों
से अधिक, अपने आप को प्रेम से ढाँक
लो, जो सिद्धता का कमरबंद है।
15मसीह की शान्ति, जिसके लिए तुम्हें
इस देह में निमंत्रण दिया गया है, तुम्हारे
मन में शासन करे। उन्हें सदा धन्यवाद देते
रहो। 16मसीह का वचन सारी बुद्धिमानी के
साथ और बहुतायत से तुम में बना रहे, यीशु
के लिए अपने मन में गाते हुए भजन और
आत्मिक गीतों द्वारा एक दूसरे को सिखाते
और समझाते रहो। 17बोल-चाल और जो
काम किया जाए, सब कुछ प्रभु यीशु के
नाम में हो और उन्हीं के द्वारा परमेश्वर
को धन्यवाद देते हुए करो।
18पत्नियो, अपने पतियों की बात मानो,
क्योंकि यह यीशु को पसन्द है।
19पतियो, अपनी पत्नियों से प्यार करो
और उनके साथ कठोरता का व्यवहार
मत करो।
20बच्चो, सभी बातों में अपने माता-पिता
का कहना मानो, क्योंकि इस से यीशु को
आनन्द मिलता है।
21बच्चे वालो, अपने बच्चों को चिढ़ मत
दिलाओ, कहीं वे अपनी हिम्मत न खो दें।
22सेवको, सांसारिक रीति से जो तुम्हारे
मालिक हैं, हर बात में उनके आदेश का
पालन करो। दिखाने के लिए या लोगों को
खुश करने के लिए नहीं, लेकिन मन की
ईमानदारी से स्वर्गिक पिता का भय रखते
हुए, 23जो भी तुम करते हो यह समझकर
मन लगाकर यह जानकर करो, कि लोगों
के लिए नहीं परन्तु यीशु के लिए कर रह

3:12 "परमेश्वर के चुने हुओं"- 2 कुरि. 6:16-18; 1 पतर. 2:9-10.

"पवित्र"- यूहन्ना 17:17-19 में नोट्स।

"बहुत प्रिय लोगो"- इफ़ि. 1:5; 3:18-19; 5:25-26; 1 यूहन्ना 3:1.

"कोमल करूणा...धीरज"-फ़िलि. 2:1; गल. 5:22-23.

"ढाँक लो" या "पहन लो"- रोमि. 13:14.

3:13 इफ़ि. 4:32; मत्ती 6:12,14.

3:14 "इन ...ढाँक लो"- यूहन्ना 13:34; रोमि. 12:10; 1 कुरि. 13; इफ़ि. 4:2; फ़िलि. 2:2; 1 यूहन्ना 3:18; 4:7-8. विश्वासियों में केवल प्रेम ही सिद्ध एकता को बनाए रख सकता है। इसके बगैर स्वार्थ, झगड़े और पार्टीबाजी होवेगी।

3:15 "मसीह की शान्ति"- यूहन्ना 14:27; फ़िलि. 4:6-7 हमारे जीवन में शान्ति को विराजमान होना चाहिए, परमेश्वर से हमारे कार्य प्रेरित होने चाहिए। ऐसा कुछ हम न करें जो हमें डराए या हमारी शान्ति छीन ले। शान्ति एक कोमल फूल की तरह है। दुष्टता इसे मुर्झा देती है।

"इस देह"-1 कुरि. 12:12-13. इसी के प्रकाश में हम एक दूसरे के साथ बर्ताव करें - 1 कुरि. 1:10; फ़िलि. 2:2.

"धन्यवाद देते रहो"- 1:2; 2:7.

3:16 इफ़ि. 5:18-20 से तुलना करें। परमेश्वर के आत्मा से भरने और यीशु की शिक्षा (वचन) के हमारे अन्दर रखने में गहरा सम्बन्ध है।

"बना रहे"- इफ़ि. 3:17; भजन 119:11. विश्वासियों को दिए गए यीशु के वचनों के वज़न को देखें। भजन 1:2; व्यव. 6:6-7; यहोशू 1:8.

"सिखाते और समझाते"- सभी विश्वासियों को चाहिए कि वे एक दूसरे को सिखाएं और समझाएँ। यह तभी हो सकता है, जब हमारे भीतर यीशु की शिक्षा है।

3:17 1 कुरि. 10:31 से तुलना करें.

"प्रभु ...नाम में"- उनके स्वभाव, शिक्षा और उनके अधिकार के अनुसार हम पृथ्वी पर उनकी जगह पर हैं। यहाँ हमारे लिए एक नियम है। यदि हम बिना उनके अधिकार कुछ कह नहीं सकते, कर नहीं सकते तो चुपचाप रहना चाहिए। विश्वासी इसी संसार में यीशु की जगह पर हैं। उन्हें अपनी मर्जी से नहीं जीना है।

3:18-25 इफ़ि. 5:22—6:8 और नोट्स देखें।

हो। 24क्योंकि तुम यीशु मसीह की सेवा करते हो, यह जान लो, कि तुम्हें मीरास का ईनाम यीशु से ही मिलेगा। 25किन्तु जो व्यक्ति गलत करेगा, अपनी गलती के परिणाम को भुगतेगा। परमेश्वर लोगों के साथ पक्षपात नहीं करते हैं।

4 मालिको यह जानते हुए कि स्वर्ग में तुम्हारे एक स्वामी हैं, अपने सेवकों को सही मजदूरी दो।

2धन्यवाद के साथ प्रार्थना में पूरे मन से लगे रहो। 3हमारे लिए यह बिनती करना कि मसीह के भेद और वचन के लिए परमेश्वर एक द्वार खोलें। इसी वचन की सेवा के कारण मैं कैदी हूँ। 4ताकि जैसा वचन मुझे देना चाहिए, मैं साफ तरीके से दे सकूँ। 5समय का सही इस्तेमाल करते हुए बाहर वालों के साथ, बुद्धिमानी के साथ बर्ताव करें। 6तुम्हारा बोलना सदैव मीठा हो, उसमें दया भरी हो ताकि तुम यह जान सको कि लोगों को कैसे जवाब दिया जाए।

7मेरे विषय में तुखिकुस तुम्हें समाचार देगा। मसीह में वह सज्जन भाई और मेरे साथ काम करने वाला विश्वासयोग्य सेवक है। 8मैंने इसी उद्देश्य से उसे तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम हमारा हाल चाल जान सको, और वह तुम्हारी हिम्मत बढ़ा सके। 9उनेसिमुस विश्वसनीय और भला व्यक्ति है, उसे भी साथ में भेजा गया है और वह तुम्हीं में से है। ये लोग ही यहाँ पर होने वाली सभी बातों को बतलाएँगे।

10अरिस्तिखुस, मेरा संगी कैदी और मरकुस (जिसके बारे में तुम्हें बताया गया) जो बरनबास का भाई है, नमस्कार कहते हैं। मैंने बताया था कि यदि मरकुस तुम्हारे पास आता है, उसका स्वागत करो। 11यीशु, जो यूस्तुस भी कहलाता है, तुम्हें सलाम कहता है। ये तीनों यहूदी मत से आए हैं, जिन्होंने स्वर्गिक पिता के राज्य

4:1 इफ़ि. 6:9

4:2 इफ़ि. 6:18; लूका 18:1.

"धन्यवाद"- 1:12; 2:7; 3:15,17; 1 थिस्स. 5:18.

4:3 इफ़ि. 6:19-20.

"मसीह के भेद"- 1:25-27 पौलुस हम सभी के लिए एक नमूना है। वह सदैव ऐसे अवसर को ढूँढता था कि लोगों को मसीह के विषय बताए। वह अवसरों की तलाश में रहा करता था। दूसरों से प्रार्थना के लिए कहा करता था।

4:4 "जैसा वचन मुझे देना चाहिए"- हम अलग-अलग स्थितियों में तरह-तरह के लोगों से मिलते हैं। कब कैसे बातें करें, हम नहीं जानते। इसके लिए हमें सही सोच, प्रार्थना और अध्ययन की जरूरत है।

4:5-6 विश्वासियों को चाहिए, कि सोचें कि उनके शब्दों और कार्यों का असर अविश्वासियों पर क्या होगा। बाहर के लोग जो हम से सुनते और हम में देखते हैं, उसी से हमें जान सकते हैं। यदि हम दिए गए अवसरों पर लोगों को मसीह के विषय में नहीं बताते, तो हम उनके नरक जाने के ज़िम्मेदार होंगे।- प्रे.काम 20:25-27 जब हम उन से बातचीत करते हैं हमें दीनता और नम्रता से सब कुछ कहना चाहिए। हमें ईश्वरीय कृपा पर ज़ोर डालना चाहिए। भजन 45:2 और लूका 4:22 से तुलना करें।

नमक के दो अर्थ हो सकते हैं। नमक से स्वाद आता है। हमारी बातचीत से लोगों में सुनने की दिलचस्पी बढ़नी चाहिए। नमक सड़ाहट को रोकता है। लोगों की खराब भाषा का उपयोग हमें नहीं करना चाहिए।

4:7 "तुखिकुस"- इफ़ि. 6:21.

4:8 "हिम्मत"- 2:2.

4:9 "उनेसिमुस"- 2:2; फिले. 10-12,16.

4:10 "अरिस्तिखुस"- प्रे.काम 19:29; 20:4; 27:2; फिले. 24.

"कैदी"- पद 18; इफ़ि. 3:1; फ़िलि. 1:13.

"मरकुस"- प्रे.काम 12:12,25; 13:5,13; 15:37-39; 2 तीमु. 4:11; फिले. 24; 1 पतर. 5:13.

4:11 'यहोशू' नाम, ग्रीक में 'यीशु' था और बहुत से लोग इस नाम को नहीं रखते थे।

"स्वर्गिक पिता के राज्य"- मत्ती 4:17; रोमि. 14:17 के नोट्स देखें।

के लिए ईमानदारी से मेहनत की है - वे ऐसे लोग हैं, जिनसे मुझे तसल्ली मिलती है। 12इपफ्रास भी जो तुम में से एक और मसीह का सेवक है, सलाम कहता है। वह सदा बड़ी लगन से प्रार्थना में मेहनत करता है, ताकि तुम परमेश्वर की इच्छा में पूरी तरह स्थिर बने रहो। 13मैं इस बात का गवाह हूँ कि लौदीकिया और हियरापोलिस के लोगों लिए उसके पास बड़ी धुन है। 14प्रिय चिकित्सक लूका और देमास तुम्हें नमस्कार कहते हैं। उन भाइयों को नमस्कार कहना 15जो लौदीकिया में हैं और निम्फ़स के घर में मिलने वाली मण्डली को भी।

16जब यह चिट्ठी तुम्हारे यहाँ पढ़ी जाए, तो यह भी ध्यान रखना कि लौदीकिया के चर्च में भी यह पढ़ी जाए और इसी तरह तुम लोग लौदीकिया को लिखे गए पत्र को पढ़ना।

17अर्खिप्पुस से कहना, कि वह यीशु से मिली हुयी सेवा को पूरा करे।

18यह अभिवादन मैं पौलुस स्वयं अपने हाथों से लिख रहा हूँ। मेरी जंजीरों को याद रखो। तुम पर दया बनी रहे। ऐसा ही हो।

4:12-13 "इपफ्रास"- 1:7.

"बड़ी तत्परता से प्रार्थना"- 2:1 यह स्वयं उसके लिए नहीं, किन्तु दूसरों के लिए था। वह उनके लिए आत्मिक जीत को हासिल करना चाहता यी। प्रायः देह की कमज़ोरियों और आत्मिक क्षेत्र में विरोध के कारण आत्मिक कुश्ती की ज़रूरत पड़ती है - मत्ती 26:40-41; इफ़ि. 6:12. उत्पत्ति 32:24-32 से तुलना करें।